मृदा

19 जनवरी 2019

- , , — , - , -

> "मृदा के साथ जैसा आप व्यवहार करेंगे, वह भी आपके साथ वैसा ही व्यवहार करेगी, मित्रों। अनजाने ही सही, यदि आपने उसके साथ बुरा व्यवहार किया, तो वह भी आपको फसल नहीं देगी, बुरा व्यवहार करेगी।"

— ,- , , -- — - 300 - - , - - , — - , : - , , - - -

- -,- - - , — - — GMO- 2004 — - - 2009 -- , - - - - — ,

: 15-16 --- - — -; - (-) - — ,- - - : , ,- — , 1960 - "" - — ,-

— , , - — ;

- - , - , — - - , -, - — -

> "मौसमी कृषि-मज़दूर जज़िरे और शिर्नाक से ही क्यों? वहीं क्यों? राजनीतिक-आर्थिक भूगोल यह तय करता है कि पारिस्थितिक समस्याएँ कहाँ उठेंगी और कहाँ दिखेंगी।"

(2006,), - , 2009 2015 , , , , - — -8 — - - -: - 1990 : - — , , ; — ; — ,

- : , — 1990 —, ,- , — - (, -) -

QGIS - - - " " — - - ; , -, - - 2010 — , , — — - (-)

-, —, - — — — - - — : ?

-, , - HES-- - — - -: - - , - — , -, - : , , — - - : — , -

> "बहुत आशय हैं, पर सक्रिय होने के स्तर पर हम इस समय थोड़े स्थिर हैं।"

- — - , , , — ( ) , - , NGO — , - —

- , — , - : , , — , , - —

- , HES- - — ,

— - — - 2014 - , - , –

- (2013): — " " — /- : -, " " 350 , , , — - ,

"इस ग्रह पर मानवता समाप्त हो जाए तो भी वे जीते रहेंगे।"

, - - (1960) , - - , - , — - : , ,

D8M : - — - , (,) — - - , — , ; , ; - — -, — -

-

यल्दज़ि वश्ववद्यिालय के वास्तुकला-स्नातक, बार्सलिोना से डजिटिल-टेक्टोनकि स्नातकोत्तर, बल्गिी वश्ववद्यिालय में अध्यापन, में डजिटिल-उत्पादन-वधियिों पर शोध करने वाली एक डज़िाइनर — दस्तकारी, उपकरण, क्रयिा-द्वारा-सीखना पर केन्द्रति एक डज़िाइन-शोधकर्ता। 4 डज़िाइन-बएिनाले के शोध के अन्तर्गत मेंदेरेस घाटी के कृषि-बाज़ार (ओदेमशि, तरिे, नाज़लिी, करा-कासू) देखे गए — गोहर गुर्जान तान (वास्तुकार, बाज़ार-शोधकर्ता) और तंगोर तान (कृषि-इंजीनयिर, खाद्य-वशिषज्ञ) के साथ। उत्पादन-उपभोग-जाल नगरीय-ग्रामीण सम्बन्ध रचते हैं — इन जालों को समझना खाद्य-तंत्र को समझना है।

2017-2018 - : - , -, - — - - —, -, , , -

-: 40- - — , -, — - 40 " " ? , - - — - - (-)

: - - - - — " ?" " ? ? ?" - , — -, - - - - —

, , - , - -- (40 25 ;) 1993 - — -

पवन-टरबाइन-त्वरण-परयिोजना (वद्यिालय), कन्टेनर-आवास पर दो पेटेण्ट, छात्र-सक्रयितावाद, गणति और शतरंज की प्रतयिोगतिाएँ — एक बहुदशिीय मस्तष्कि। अब इस्तानबुल मेदपिोल वश्ववद्यिालय के सहयोग से एस्कशिहरि सारीचाकाया में — अस्ट्रागलस उगने वाले सूक्ष्म-जलवायु क्षेत्र में — मौसमी कृषि-मज़दूरों के लएि कन्टेनर-आवास के डज़िाइन पर डॉक्टरेट। स्नातकोत्तर का शोध-प्रबन्ध मृदा-वास्तुकला और टकिाऊ डज़िाइन पर है। 2002-2017 के बीच मज़दूर-बस्तयिों के स्थानकि वकिास का द्वारा वश्लिेषण — पन्द्रह वर्षों का परविर्तन उपग्रह-छवयिों में पढ़ा जाता है। हर्रान के घर के मलकाफ (पवन-मीनार) की नष्क्रयि-शीतलन तकनीक से प्रेरति कच्ची-मट्टिी की वास्तुकला का प्रस्ताव — कच्ची ईंट, अडोब, मृदा को प्राथमकि रोधन-सामग्री के रूप में प्रयोग करते बहु-परत तंत्र। मुख्य योजना: सामान्य रसोई का स्थान, सामाजकि स्थल, पर्माकल्चर का एकीकरण — मज़दूरों द्वारा अपने भोजन (टमाटर, बैंगन, मर्चि) को उगाना। गरमिामय आवास, स्वस्थ जीवन, संगठन-क्षमता — ये वास्तुशलि्पीय नर्णियों से सीधे जुड़े हैं।

"स्थानीय वास्तुकला — मार्दनि के स्वयं रचे गए बस्ती-वन्यिास — अपने भीतर पारस्थितिकि ज्ञान धारण करती है। आवष्कार नहीं, गुणन; मृदा को प्राथमकि रोधन-सामग्री के रूप में उपयोग करना; बहु-परत तंत्रों का डज़िाइन करना।"

- - , - ,, — , - -

- — — -, , , - - ? ? - , - — , , ; , -,

- — , — 1993 : , ,

-

-, - , — — "" - -

- — — , , - — - — , - -

: ? — , - - , , — , -, — ,

"खाद्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हमारा स्थानीय उत्पादन अविश्वसनीय रूप से गिर गया है। स्थानीय रूप में हम क्या कर सकते हैं?"

यह के (श्वसन) कार्यक्रम की नवीं और अन्तिम सभा है। दो वर्षों से अधिक समय में, जल से जैव-विविधता, चयापचय से सीमाओं, जलवायु से खनन, लैंगिकता से ऊर्जा होती हुई, मृदा तक फैली एक यात्रा पूर्ण हुई है। प्रत्येक सभा ने विभिन्न अनुशासनों के लोगों को एक ही मेज़ पर लाया है — श्रेणीक्रम नहीं, समय का साम्य, वैयक्तिक कथन, औपचारिक संरचना-रहितता।

- — - , -, -, - , -, -, - — - , - , - - : , , - , - -

— " " , — - - , — , -,

: — - , — ? - - : ,

: , , — , , — 15 - , - , - — - ,

पर मृदा हमें एक बात सिखाती है: शुष्क सतह पर वर्षा की पहली बूँद गिरते ही, सूक्ष्मजीव जागते हैं। जागने के लिए परिस्थितियों का पूर्ण होना आवश्यक नहीं — एक बूँद पर्याप्त है। हरकत — एक नहीं बहु, रेखीय नहीं प्रकंदिक, केन्द्रित नहीं वितरित — एक साथ अनेक अभ्यासों के माध्यम से, विभिन्न पैमानों पर, विभिन्न भूगोलों में होती है। कार्यक्रम स्वयं इस अभ्यास का रूप रहा है: अप्रत्याशित निरन्तरताओं और सम्बन्धों को रचा, विभिन्न अनुशासनों के लोग एक ही प्रश्न को भिन्न भाषाओं में पूछना सीखे, प्रतिभागियों ने पाया कि वे प्रच्छन्न क्षेत्रों में काम जारी रखेंगे। सामुदायिक बग़ीचे से उत्पादक-बाज़ार तक, मौसमी मज़दूर के तम्बू से मृदा-वास्तुकला तक, सूक्ष्मजीवों की दुनिया से खाद्य-सहकारी तक — सब उसी जाल के गाँठें हैं।

, , - — , , , — , , , ,

सामाजिक-आर्थिक चयापचय — समुदाय के रूप में हम अपने आसपास को कैसे व्यवस्थित करते हैं, बाहर से आगत, भीतर प्रसंस्करण, बाहर निकासी। ज्ञान-समग्रता — एक ही अनुशासन में न बँधना, समग्रता को देखना। प्रकंद — केन्द्र-रहित, क्षैतिज रूप में बहुगुणित, टूट जाए तो भी चलता जाल। ये तीन संकल्पनाएँ के कार्यक्रम का बीज हैं, और मृदा-सभा में अन्तिम बार, पर सबसे मूर्त रूप में परखी गई हैं। मृदा की भाँति: चक्रीय, जीवित, शुष्क दिखती हुई भी पहली बूँद पर जागती।